



सत्यवीर नाहड़िया के हरियाणवी लोक साहित्य में आध्यात्मिक चेतना : एक विवेचन

मनीषा कुमारी¹, डॉ. शिवानी शर्मा²

1 शोधार्थी, हिंदी विभाग, भगवंत विश्वविद्यालय, अजमेर (राजस्थान)।

2 शोध निर्देशिका, हिंदी विभाग, भगवंत विश्वविद्यालय, अजमेर (राजस्थान)।

सारांश (Abstract)

सत्यवीर नाहड़िया के लोक साहित्य में आध्यात्मिक चेतना और तत्व ज्ञान का व्यापक स्वरूप दिखाई देता है। उनका लोक साहित्य भारतीय दर्शन, मानवीय मूल्य और आध्यात्मिक अभिव्यक्ति का समन्वित दस्तावेज है। उन्होंने अपने लोक साहित्य में जीवन, आत्मा, कर्म, ईश्वर, प्रकृति, सत्य आदि को बड़े ही सरल व सहज ढंग से लोकमन के बीच प्रस्तुत किया है। उनकी आध्यात्मिक रचनाएं लोकमन की आत्मा हैं। कण-कण में ईश्वर की सत्ता की अनुभूति भारतीय संत-परंपरा की चेतना का मूल रहा है। कर्म-फल का सिद्धांत जीवन का अटल नियम है। यह प्रकृति में अनादि काल से अनवरत चला आ रहा है। उनके इस लोक साहित्य में सत्य को सर्वोच्च स्थान दिया गया है।

मुख्य शब्द (Key Words) : लोक साहित्य, आध्यात्मिक चेतना, तत्वज्ञान, लोकमन, आत्मा, प्रकृति, सत्ता, अनुभूति, संत-परंपरा, अनादि, अनवरत।

लोक संस्कृति व लोक परंपरा एक दूसरे की पूरक मानी जाती हैं। लोक परंपराओं के कारण ही लोक संस्कृति जिंदा रहती है। संपूर्ण भारतीय चिंतन का आधार कण-कण में भगवान की मौजूदगी बताया है। ईश्वर पूरे ब्रह्मांड में व्याप्त है। नाहड़िया ने ईश्वर के सहज स्वरूप को आम जन तक 'बखत-बखत की बात' रचना में बहुत ही सरल और लोक भाषा में पहुंचाने का असाध्य प्रयास किया है।

रोम-रोम मंहं सै रम्या, कण-कण मंहं भगवान ।

उसनै टोहण मंहं दिखे, क्यूं छाणै सै ज्हान ।।

इसी प्रकार भारतीय आध्यात्मिक विचारधारा में ईश्वर की सत्ता को सर्वोपरि माना है। ईश्वर के विधान में प्रत्येक मनुष्य समान है। भारतीय संतों ने आमजन को संदेश दिया कि व्यक्ति को अहंकार त्याग कर प्रेम, भाई-चारा, विनम्रता, त्याग तथा सत्य के मार्ग को ही अपनाना चाहिए, क्योंकि ईश्वर की सत्ता अनादि, अनंत, सर्वव्यापक और



सर्वशक्तिमान है। इसी संदेश को नाहड़िया जी ने मां बोली हरियाणवी में 'नाहड़िया की कुंडलियां' रचना द्वारा आम जन तक पहुंचाने का सुंदर प्रयास किया है।

माया मालिक की सदा, रह सै अपरम्पार ।
तीन लोक नौ खंड म्हां, पावै हरदम त्यार ।
पावै हरदम त्यार, हार नै जीत बणावै ।
सुण राज्जा नै रंक, रंक नै राज दिवावै ।
नाहड़िया कबिराय, छोर अर् ओर ना पाया ।
होवै अपरम्पार, सदा मालिक की माया ॥

इस संसार का संपूर्ण संचालन प्रभु के हाथ में है। नाहड़िया के लोक साहित्य में इसका वर्णन मिलता है। हर एक मनुष्य इस संसार रूपी रंग मंच पर अपनी-अपनी भूमिका निभाता है, चाहे राजा हो या रंक। जीवन की डोर उसी परमात्मा के अधीन है। इस परम सत्य को लेखक ने 'नाहड़िया की कुंडलियां' में बखूबी वर्णित किया है।

नाटक यो जग एक सै, वो सै नाटककार ।
कलाकार सभ लोग सैं, रंगमंच संसार ।
रंगमंच संसार, सार सै यो हे सच्चा ।
रमे हुये नर-नार, रोल म्हां बालक-बच्चा ।
पड़दा पड़ता फेर, बंद ज्यू होज्या फाटक ।
करकै पूरा रोल, सरू वो अगला नाटक ॥

आध्यात्मिक दृष्टि से परमेश्वर ही पूरी सृष्टि का रचयिता और पालनकर्ता है। उसकी माया अनंत है, जिसे संपूर्ण जगत ने माना है। प्रभु की कृपा से ही मनुष्य को सद्मार्ग, शांति और सद्भाव का ज्ञान होता है। 'चालती-चाक्की' रचना में इसका वर्णन मिलता है।

न्यारी माया राम की, जाणै जगत तमाम ।
वै सभके सैं मोरधी, खास हुवै चै आम ।
खास हुवै चै आम, नाम जो उनका ध्यावै ।
होज्या बेड़ा पार, राह वो इसी सुझावै ।
सभका मालिक एक, बड़ा नै खूब बताया ।
न्यारा सै यो नाम, राम की न्यारी माया ॥



THE STANFORD JOURNAL

(AN INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH) IJIN VALUE/

IMPACT FACTOR : 8.3

Volume-3, Issues-3

July-September: 2026

‘हरियाणा के रंग’ नामक कृति में रचनाकार नाहड़िया ने ईश्वर के विभिन्न रूपों का विशेष वर्णन किया है और बताया कि ईश्वर की शक्ति अनंत है। संत साहित्य में ईश्वर को दिव्य चेतना का स्वरूप माना गया है।

न्यारा उसका रूप सै, लाग्गै उसकी तेक।
सभ म्हं उसका नूर सै, सभका मालिक एक।
सभका मालिक एक, निराळा सिरजण हारा।
कण-कण म्हं बिदमान, रूप हर उसका न्यारा ।।

ईश्वर के अनंत व अनादि स्वरूप का वर्णन कविवर नाहड़िया ने ‘गाऊँ गोबिंद-गीत’ में इस प्रकार किया है कि ईश्वर की परम सत्ता का अनुभव आम व्यक्ति को सहज ही हो जाता है।

बैठ्या वो हर जीव म्हं, कण-कण म्हं वो पाय।
अपणी माया तै सदा, सभ नै दे भरमाय ।।

‘गाऊँ गोबिंद-गीत’ में कर्म-फल के सिद्धांत की सीधी और सरल व्याख्या रचनाकार ने प्रादेशिक बोली में की है। श्रीमद्भगवद्गीता में बताया कि मनुष्य को अच्छे कर्म करने चाहिए क्योंकि कर्म का परिणाम फल ही है। इसलिए मनुष्य को कर्म को ही अपना कर्तव्य मानना चाहिए। फल की इच्छा से कर्म नहीं करना चाहिए।

फरज़ करम नै मान कै, करता जा बस काम।
करम सदा बिन मोह कै, मिलवादे वो नाम ।।

इसी आध्यात्मिक चेतना को संत शिरोमणि बाबा रामस्वरूप दास जी महाराज ने अपनी सरल, सीधी, निश्चल भाषा में पिरोया है। उन्होंने आमजन से आह्वान किया कि व्यक्ति के मन एवं व्यवहार में एकरूपता होनी चाहिए। ऐसे व्यवहार वाले व्यक्ति को कण-कण में ईश्वर की अनुभूति होने लगती है। इस काव्य संग्रह को नाहड़िया जी की लेखनी ने खूब रंग दिया है।

सबका मालिक एक बताया।
जिसने सारा जगत रचाया।
एक भाव से, नेक भाव से—
जिसने ध्याया, उसने पाया ।।



सतगुरु नितानंद महाराज पर आधारित महाकाव्य को लेखक नाहड़िया ने ठेठ हरियाणवी बोली में इस प्रकार पिरोया है कि महाराज जी की अमर दिव्य वाणी आम जन के घट-घट में उतरती चली गई। उन्होंने कहा कि मनुष्य माया के जाल में फंसकर अपने वास्तविक उद्देश्य को भूल जाता है। सांसारिक आकर्षण उसे फंसा लेते हैं। उन्होंने मनुष्य के जन्म को आत्म कल्याण का मार्ग बताया और ईश्वर को ही शाश्वत सत्य माना।

आवैं मुट्ठी भींच कै, जावैं हाथ पसार।
बस इस म्हं सारा छिप्या, इस दुनिया का सार।
इस दुनिया का सार, चोरटी-चंचल माया।
न्यारे इसके रूप, धूप-सी इसकी छाया।
झुट्टे सारे गीत, जगत म्हं जो हम गावैं।
आकै भुल्लै हाय, काम जिस खात्तर आवैं।।

निष्कर्ष :

इस शोध पत्र में नाहड़िया के लोक साहित्य में सत्य, नैतिक, विश्वास, प्रकृति व ईश्वर के अनंत स्वरूप के दर्शन का वर्णन मिलता है। यह लोक साहित्य जीवन के आध्यात्मिक व नैतिक मूल्यों की एक थाती है। यह लोक जीवन की आध्यात्मिक चेतना की आत्मा का जीवंत दस्तावेज है तथा भारतीय संस्कृति, लोक मूल्य, लोक विश्वास एवं प्रकृति के प्रति अटूट विश्वास, जो आने वाली पीढ़ियों के लिए अमूल्य धरोहर है।

संदर्भ ग्रंथ सूची –

1. बख़त-बख़त की बात : सत्यवीर नाहड़िया, पृ.-37
2. नाहड़िया की कुंडलियां : सत्यवीर नाहड़िया, पृ.-23, 123
3. चालती चाक्की : सत्यवीर नाहड़िया, पृ.-13
4. हरियाणा के रंग : सत्यवीर नाहड़िया, पृ.-15
5. गाऊँ गोबिंद-गीत : सत्यवीर नाहड़िया, पृ.-110, 30
6. संत शिरोमणि बाबा रामस्वरूप दास जी महाराज : व्यक्तित्व एवं कृतित्व : सत्यवीर नाहड़िया, पृ.-19
7. सतगुरु नितानंद जी महाराज : सत्यवीर नाहड़िया, पृ.-44